बरेली, बुधवार
23 फरवरी, 2022
नगर संस्करण
मूल्य ₹ 7.00
पृष्ठ 16

दैनिक जागरण

Page No : 02 Top

जागरण विशेष

ट्यूशन पढ़ाकर खुद पढ़े, बना ली दो सौ करोड़ की कंपनी

बरेली की गलियों से अमेरिका के कारोबार जगत तक क्षितिज अग्रवाल ने लिखी स्वावलंबन की कहानी, तीन सौ युवाओं को दे रहे रोजगार

अशोक आर्य ● बरेली

अमेरिका में भारतीय मेधा का परचम लंबे समय से लहरा रहा है। सिलिकान वैली में भारतीयों का वर्चस्व जगजाहिर है, लेकिन एक भारतीय युवा ने देश में ही रहकर अमेरिका के कारोबार जगत में अपनी पकड़ बनाई है। खुद पढ़ सकें, इसलिए बरेली की गलियों में कभी ट्यूशन पढ़ाकर शुरुआत करने वाले क्षितिज अग्रवाल आज दो सौ करोड़ की कंपनी के मालिक हैं। स्वावलंबन की इस सफल यात्रा में क्षितिज ने कई पड़ाव देखे, लेकिन हार नहीं मानी।

नौकरी का लक्ष्य नहीं था: 25 हजार रुपये से शुरुआत की, लेकिन यह उनका लक्ष्य नहीं सिर्फ पड़ाव था। इस वक्त वह करीब दो सौ करोड़ के टर्नओवर वाली टेकिला ग्लोबल सर्विसेज के कर्ताधर्ता हैं। साहूकारा के मूल निवासी क्षितिज की कहानी उन्हीं मध्यमवर्गीय युवाओं की तरह है, जो पढ़ाई के दिनों में संसाधनों की कमी से जूझते हैं। सातवीं कक्षा में थे, तब पिता के कारोबार में घाटा होने से मां कोचिंग पढ़ाने लगीं। क्षितिज भी खुद पढ़ते, इसके बाद मोहल्ले के बच्चों को ट्यूशन पढ़ाकर अपने खर्च पूरे करते। उन दिनों को याद करते हुए क्षितिज कहते हैं कि महीने में मिलने वाले एक हजार रुपये से पिता पर बोझ नहीं पड़ने देता था। इसी तरह 12वीं तक की पढ़ाई पूरी कर ली। वर्ष 2004 में श्रीराममूर्ति कालेज में बीटेक में प्रवेश के लिए रुपये नहीं थे। साढ़े तीन लाख रुपये का लोन लिया, तब पढ़ सका। लोन निपटाने के लिए क्षितिज ने शहर के दो कोचिंग संस्थानों में पार्ट टाइम पढ़ाना शुरू किया।

दो साथियों संग शुरुआत: क्षितिज बताते हैं कि उस समय साफ्टवेयर की दुनिया में सेल्सफोर्स नई तकनीक मानी जाती थी। मैंने पुणे के दो साथियों को इसकी बारीकियां बताईं। वहीं से टेकिला ग्लोबल सर्विसेज कंपनी शुरू की। क्षितिज को कंपनी के लिए पहली व्यापारिक डील अमेरिका से मिली। वह कहते हैं कि इस डील से इतने रुपये मिले कि नौकरी से पांच वर्ष में नहीं कमा पाते। यहीं से ऊर्जा मिली। क्षितिज ने पुणे में कंपनी का पहला कार्यालय शुरू किया। बाद में अमेरिका में भी कार्यालय खोलकर कंपनी का विस्तार किया। इस समय भारत व अमेरिका के करीब तीन सौ लोग उनकी कंपनी के लिए काम करते हैं।

अपने शहर के युवाओं को देंगे नौकरी

क्षितिज जिस अमेरिका में नौकरी करने गए थे, आज उसी देश के युवाओं को नौकरी दे रहे हैं। कंपनी के आठ प्रमुख पदों पर सात अमेरिकी हैं। वह कहते हैं कि अब अपने शहर के इंजीनियरों के लिए वहीं अवसर उपलब्ध कराऊंगा। इसके लिए बड़ा प्रोजेक्ट बनाया है, जिसमें सौ युवाओं को शामिल करूंगा। उनकी कंपनी सेल्सफोर्स की निश्शुल्क शिक्षा भी देती है। यह क्लाउड आधारित साफ्टवेयर डेवलपमेंट तकनीक है। जिसे किसी भी कंपनी द्वारा कस्टमाइज किया जा सकता है।

पुणे में अपनी कंपनी के कार्यालय में क्षितिज अग्रवाल ● सौ. स्वयं

खुद के लिए काम करने की चाह

वर्ष 2008 में क्षितिज अग्रवाल को कंप्यूटर क्षेत्र की कंपनी आइबीएम में बतौर साफ्टवेयर इंजीनियर नौकरी मिली और पुणे चले गए। वेतन 25 हजार रुपये प्रति माह था। वहां से अमेरिका भेज दिया गया, तीन वर्ष वहीं रहे। वर्ष 2011 में कंपनी के लिए बड़ी डील कराई तो लगा कि यह काम अपने लिए करना चाहिए। अमेरिका से लौटने के बाद क्षितिज ने तय कर लिया कि नौकरी नहीं करेंगे, दूसरों को रोजगार देंगे।

इस खबर को विस्तार से पढ़ने के लिए स्कैन करें